तीरंदाज

■ अश्विनी भटनागर

ज्ञानमार्ग, भक्तिमार्ग !

एक तो अति विस्तृत, अगम्य अंधकारमय जंगल, उस पर रात्रि का समय। पतंग उस जंगल में रहते हैं, लेकिन कोई चूं तक नहीं बोलता है। शब्दमय पृथ्वी की निस्तब्धता का अनुमान किया नहीं जा सकता है; लेकिन उस अनंत शून्य जंगल के सूचीभेध अंधकार का अनुभव किया जा सकता है। सहसा इस रात के समय की भयानक निस्तब्धता को भेद कर ध्वनि आई, 'मेरा मनोरथ क्या सिद्ध न होगा?'

इस तरह तीन बार वह निस्तब्ध अंधकार आलोड़ित हुआ, 'तुम्हारा क्या प्रण है?' उतर मिला, 'मेरा प्रण ही मेरा जीवन सर्वस्व है।'

प्रतिशब्द हुआ, 'जीवन तो तुच्छ है, सब इसका त्याग कर सकते हैं।'

'तब और क्या है... और क्या होना चाहिए?'

उत्तर मिला, 'भक्ति।'

संन्यासी आंदोलन और बंगाल अकाल की पृष्ठभूमि पर लिखी बाकिमचंद्र चट्टोपाध्याय की कालजयी कृति 'आनंदमठ' की शुरुआत इस प्रकरण से होती है। आनंदमठ 1882 में छपी थी। राष्ट्रभक्ति और हिंदुत्व की प्रधानता के भाव की वजह से इस कृति का विशिष्ट स्थान है। इसके एक गीत 'वंदे मातरम' को राष्ट्रीय गीत का दर्जा भी प्राप्त है।

बाकिमचंद्र की कहानी सूखा ग्रस्त बंगाल के एक गांव पदचिह्ना से शुरू होती है, जहां के जमींदार महेंद्र सिंह अपनी बदहाली से त्रस्त होकर अपनी पत्नी कल्याणी और बेटी सुकुमारी के साथ भोजन की व्यवस्था करने के लिए घर से निकलते हैं, पर अप्रत्याशित उनसे बिछड़ जाते हैं। कल्याणी कुछ डकैतों के चुंगल में फंस जाती है, पर जल्द ही वहां से बच निकलती है। उसकी मुलाकात सत्यानंद से होती है, जो आनंदमठ के प्रधान हैं। वे कल्याणी को अपने मठ में शरण देते हैं और अपने संन्यासी साथी भवानंद को महेंद्र सिंह को ढूंढ़ने भेज देते हैं।

इस बीच ईस्ट इंडिया कंपनी का राजस्व कलकत्ता भेजा जा रहा था और अंग्रेज फौजें जंगल में चौकसी कर रही थीं। महेंद्र और भवानंद को जंगल में घूमता देख कर वे दोनों को पकड़ लेती हैं। उनकी बंदी अवस्था के चलते, संन्यासियों का एक जत्था कंपनी के राजस्व को लूटने के लिए हमला करता है और उन्हें छुड़ा लेता है। मठ की तरफ जाते हुए महेंद्र भवानंद को लूट और हत्या के लिए धिक्कारता है, पर उसकी बातों का जवाब देने के बजाय भवानंद वंदे मातरम गा उठता है।

अपनी धरती को मां की तरह पहचानने का पाठ महेंद्र आनंदमठ में रह कर पढ़ता है और जल्दी ही वह संन्यासियों से एक हो जाता है। वह भी अपनी धरती मां का गौरव और प्रतिष्ठा और उसकी संपन्नता को पुनर्स्थापित करने का व्रत लेता है। अंत में, सत्यानंद के नेतृत्व में संयासी समुदाय अंग्रेजी फौज को बुरी तरह परास्त करता है और खजाना अपने आधीन कर लेता है। यह परम वीरता और उल्लास का क्षण था, जिसमें हिंदू राष्ट्र की पहली स्वर्णिम किरण क्षितिज पर साफ दिख रही थी, पर आनंदमठ की कहानी एक आखिरी मोड़ लेती है।

अंतिम अंश इस प्रकार है :

'चिकित्सक बोले- 'सत्यानंद! आज माघी पूर्णिमा है।'

सत्यानंद- 'चलिए मैं तैयार हूं। किंतु महात्मन्! मेरे एक संदेह को दूर कीजिए। मैंने क्या इसीलिए युद्ध-जय कर सनातन-धर्म की पताका फहराई थी?'

जो आए थे, उन्होंने कहा- 'तुम्हारा कार्य सिद्ध हो गया, मुसलिम राज्य ध्वंस हो चुका। अब तुम्हारी यहां कोई जरूरत नहीं, अनर्थक प्राणहत्या की आवश्यकता नहीं!'

> सत्यानंद की दोनों आंखों से जलधारा बहने लगी। उन्होंने सामने जननी-जन्मभूमि की प्रतिमा की तरफ देख, हाथ जोड़ कर कहा- 'हाय माता! तुम्हारा उद्धार न कर सका। तू फिर म्लेछों के हाथ में पड़ेगी। संतानों के अपराध को क्षमा कर दो मां। रणक्षेत्र में मेरी मृत्यु क्यों न हो गई?'

सत्यानंद- 'मुसलिम राज्य ध्वंस अवश्य हुआ है, किंतु अभी हिंदू राज्य स्थापित हुआ नहीं है। अब भी कलकत्ते में अंगरेज प्रबल है।'

वे बोले- 'अभी हिंदू-राज्य स्थापित न होगा। तुम्हारे रहने से अनर्थक प्राणी-हत्या होगी, अतएव चलो!'

यह सुन कर सत्यानंद तीव्र मर्म-पीड़ा से कातर हुए, बोले- 'प्रभो! यदि हिंदू-राज्य स्थापित न होगा, तो कौन राज्य होगा, क्या फिर मुसलिम-राज्य होगा?'

उन्होंने कहा- 'नहीं, अब अंगरेज-राज्य होगा।'

सत्यानंद की दोनों आंखों से जलधारा बहने लगी। उन्होंने सामने जननी-जन्मभूमि की प्रतिमा की तरफ देख हाथ जोड़ कर कहा- 'हाय माता! तुम्हारा उद्धार न कर सका। तू फिर म्लेछों के हाथ में पड़ेगी। संतानों के अपराध को क्षमा कर दो मां। रणक्षेत्र में मेरी मृत्यु क्यों न हो गई?'

महात्मा ने कहा- 'सत्यानंद कातर न हो। तुमने बुद्धि विभ्रम से दस्यु वृत्ति द्वारा धन संचय कर रण में विजय ली है। पाप का कभी पवित्र फल नहीं होता। अतएव तुम लोग देश-उद्धार नहीं कर सकोगे। और अब जो कुछ होगा, अच्छा होगा। अंगरेजों के बिना राजा हुए सनातन धर्म का उद्धार नहीं हो सकेगा। महापुरुषों ने जिस प्रकार समझाया है, मैं उसी प्रकार समझाता हूं- ध्यान देकर सुनो। तैंतीस कोटि देवताओं का पूजन सनातन धर्म नहीं है। वह एक तरह का लौकिक निकृष्ट-धर्म है, हिंदू धर्म लुप्त हो गया है। प्रकृति हिंदू धर्म ज्ञानात्मक-कार्यात्मक नहीं। जो अंतर्विषक ज्ञान हैं, वही सनातन धर्म का प्रधान अंग हैं। लेकिन बिना पहले वहिर्विषयक ज्ञान हुए अंतर्विषयक ज्ञान असंभव है। स्थूल देखे बिना सूक्ष्म की पहचान ही नहीं हो सकती। बहुत दिनों से इस देश में वहिर्विषयक ज्ञान लुप्त हो चुका है- इसीलिए वास्तविक सनातन धर्म का भी लोप हो गया है। सनातन धर्म के उद्धार के लिए पहले वहिर्विषयक ज्ञान-प्रचार की आवश्यकता है। इस देश में इस समय वह वहिर्विषयक ज्ञान नहीं है- सिखाने वाला भी कोई नहीं, अतएव बाहरी देशों से वहिर्विषयक ज्ञान भारत में फिर लाना पड़ेगा। अंग्रेज उस ज्ञान के प्रकांड पंडित हैं- लोकशिक्षा में बड़े पटु हैं। अतः अंग्रेज के ही राजा होने से, अंग्रेजी की शिक्षा से स्वतः वह ज्ञान उत्पन्न होगा! जब तक उस ज्ञान से हिंदू ज्ञानवान, गुणवान और बलवान न होंगे अंगरेज राज्य रहेगा। उस राज्य में प्रजा सुखी होगी, निष्कंटक धर्माचरण होंगे। अंगरेजों से बिना युद्ध किए ही, निरस्त्र होकर मेरे साथ चलो।'

सत्यानंद ने कहा- 'महात्मन्! यदि ऐसा ही था, अगर अंग्रेजों को ही राजा बनाना था, तो हम लोगों को इस कार्य में प्रवृत्त करने की क्या आवश्यकता थी?'

महापुरुष ने कहा- 'अंग्रेज उस समय बनिया थे- अर्थ संग्रह पर ही उनका ध्यान था। अब संतानों (संन्यासियों) के कारण ही वे राज्य-शासन हाथ में लेंगे, क्योंकि बिना राजत्व किए अर्थ-संग्रह नहीं हो सकता। अंगरेज राजदंड लें, इसलिए संतानों का विद्रोह हुआ है। अब आओ, स्वयं ज्ञानलाभ कर दिव्य चक्षुओं से सब देखो, समझो!'

सत्यानंद- 'हे महात्मा। मैं ज्ञान लाभ की आकांक्षा नहीं रखता- ज्ञान की मुझे आवश्यकता नहीं। मैंने जो व्रत लिया है, उसी का पालन करूंगा। आशीर्वाद दीजिए कि मेरी मातृभक्ति अचल हो!'

महापुरुष- 'व्रत सफल हो गया- तुमने माता का मंगल साधन मवाल-स्थान किया- अंग्रेज राज्य तुम्हीं लोगों द्वारा स्थापित समझो। युद्ध विग्रह का त्याग करो- कृषि में नियुक्त हो, जिससे पृथ्वी शस्य शालिनी हो, लोगों की श्रीवृद्धि हो।'

सत्यानंद को आंखों से आंसू निकलने लगे, बोले- 'माता को शत्रु-रक्त से शस्यशालिनी करूं?'

महापुरुष- 'शत्रु कौन है? शत्रु अब कोई नहीं, अंगरेज हमारे मित्र हैं। फिर अंगरेजों से युद्ध कर अंत में विजयी हो- ऐसी अभी किसी की शक्ति नहीं है।'

सत्यानंद- 'न हो, यहीं माता के सामने मैं अपना बलिदान चढ़ा दूंगा।'

महापुरुष- 'अज्ञानवश! चलो, पहले ज्ञानलाभ करो। हिमालय-शिखर पर मातृ-मंदिर है, वहीं तुम्हें माता की मूर्ति प्रत्यक्ष होगी।'

यह कह कर महापुरुष ने सत्यानंद का हाथ पकड़ लिया। कैसी अपूर्व शोभा थी। उस गंभीर निस्तब्ध रात्रि में विराट चतुर्भुज विशु प्रतिमा के सामने दोनों महापुरुष हाथ पकड़े खड़े थे। किसको किसने पकड़ा है? ज्ञान ने भक्ति का हाथ पकड़ा है, धर्म के हाथ में कर्म का हाथ है, विजर्सन ने प्रतिष्ठा का हाथ पकड़ा है। सत्यानंद ही शांति है- महापुरुष ही कल्याण है- सत्यानंद प्रतिष्ठा है- महापुरुष विसर्जन है। विसर्जन ने आकर प्रतिष्ठा को साथ ले लिया।

विज्ञान शिक्षा की बुनियाद

प्रेमपाल शर्मा

समाज का विकास विज्ञान के विकास के समांतर हुआ है। इस बात को और विस्तार दें तो सुख, समृद्धि, शांति दुनिया भर में विज्ञान से ही आई है। दुनिया के सभी विकसित, उन्नत राष्ट्र इसीलिए विज्ञान का महत्त्व समझते हैं और इसीलिए अग्रणी बने हुए हैं। गौरतलब है कि पचास के दशक में रूस ने अंतरिक्ष विज्ञान और दूसरे क्षेत्रों में जैसे ही लंबी छलांग लगाई, अमेरिका में हलचल मच गई। वहां तुरंत विज्ञान पढ़ने-पढ़ाने और शोध को राष्ट्रीय प्राथमिकता में रखा गया और दूसरे विश्वयुद्ध के बाद उस शीत युद्ध में धीरे-धीरे अमेरिका विज्ञान के बूते ही बाजी मारता चला गया। न केवल दूसरे विश्वयुद्ध के दौर से जर्मनी के वैज्ञानिक आइंस्टाइन आदि अमेरिका पहुंचते चले गए, बल्कि उसके बाद से आज तक अमेरिका दुनिया के वैज्ञानिकों की पहली प्राथमिकता बना हुआ है। भारत के हरगोविंद खुराना, चंद्रशेखर, वेंकटराम कृष्णा आदि अमेरिकी शिक्षा के बूते ही दुनिया में नाम कमा पाए हैं। हम लगभग तीस वर्ष से लगातार यह देखते-सुनते आ रहे हैं कि चीन के विश्वविद्यालय विज्ञान के क्षेत्र में बहुत तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। पेटेंट और नई खोजों के पैमानों से नापा जाए तो आज चीन की स्थिति अमेरिका से भी आगे है। विज्ञान और तकनीक के बूते ही छोटा-सा इजराइल कैसे अपनी धाक जमाए हुए है। जापान तो है ही पिछले लगभग सौ सालों से सबसे मजबूत। पड़ोसी चीन की ही बात करें, तो उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालय तक को बदला है और इसीलिए दुनिया भर के शीर्ष सौ विश्वविद्यालयों में पांच से ज्यादा चीन के होते हैं और हम पहले पांच सौ में भी मुश्किल से आ पाते हैं।

शिक्षा

> विज्ञान शिक्षा की तार्किकता और दर्शन से हमारे सामाजिक विज्ञान, इतिहास, राजनीति विज्ञान के शोध भी बदलेंगे और सही मायनों में हमारे विश्वविद्यालय भी। फिर हमारे बच्चे अमेरिका, इंग्लैंड नहीं भागेंगे।

आजादी के बाद नारों और दीवारों पर तो वैज्ञानिक चेतना की बातें कही गईं, लेकिन न शिक्षा में कोई बुनियादी परिवर्तन आया और न इसी वजह से समाज में। माना हम बड़ा देश हैं, यहां कई जटिलताएं हैं, लेकिन अगर अंधेरा बढ़ता ही जाए, तो हमें पूरी नीति की समीक्षा की जरूरत है।

पिछली सरकार ज्ञान आयोग और उसकी अंग्रेजी पढ़ाने, लादने की जिद से इतनी व्यस्त थी कि सरकारी शिक्षा निजी स्कूलों की तरफ तो चली गई, उपलब्धि के नाम पर कुछ नहीं मिला। यानी अंग्रेजी ठीक करने के चक्कर में दुनिया के विश्वविद्यालयों की रैंकिंग में हम और पीछे होते गए। इसलिए पहले तो यह भ्रम हटाना होगा कि अंग्रेजी के बूते आप विश्वविद्यालयों को ठीक कर सकते हैं। कम से कम वर्तमान सरकार अंग्रेजी की वैसी दीवानी नहीं है और अगर विज्ञान को सही समझ पाए, तो मजबूत इच्छाशक्ति भी रखती है।

मौजूदा सरकार के पांच वर्ष पूरे हो चुके हैं। निश्चित रूप से समझने में समय लगता है, लेकिन बड़े परिवर्तन उस प्रक्रिया से ही संभव हैं जैसे दुनिया के राष्ट्रों ने संभव किए हैं। पांच सौ वर्ष पहले का यूरोप इसी विज्ञान के बूते भारत, चीन जैसी पुरानी सभ्यताओं को पीछे छोड़ता हुआ आगे निकल गया और आज भी उसी रफ्तार से आगे बढ़ रहा है। सभ्यता तो चीन की भी पुरानी है, लेकिन उसे मौजूदा विज्ञान से कोई परहेज नहीं है। उसने मौजूदा विज्ञान के बूते अपनी स्थिति बहुत मजबूत की है। हमारा अतीत निश्चित रूप से गौरवशाली रहा है। शून्य की खोज, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, सुश्रुत के कामों पर हमें गर्व है, लेकिन विज्ञान निरंतर बदलने वाली सोच है। दो हजार साल पहले दुनिया भर की सभ्यताएं बहुत अविकसित दौर में थीं। उसके बरक्स हम आगे थे और अगर हमें फिर से आगे होना है, तो कुछ अपनी पुरानी सभ्यताओं से उठाएं, उन्हें जांचें-परखें, दुनिया के सामने प्रमाणित करें और साथ ही दुनिया के अनुभवों को साथ लेकर आगे बढ़ें। हम महान थे, विज्ञान ऐसी किसी स्थापना को नहीं मानता। वह बार-बार उसका प्रमाण मांगता है। और इसके लिए हमारे स्कूली पाठ्यक्रमों में पूरा बदलाव चाहिए। विज्ञान श्रद्धा, भक्ति का नाम नहीं है। विज्ञान की शुरुआत ही शंका, संदेह से होती है। यह उसकी बुनियाद है। डाल्टन ने कहा- एटम सबसे छोटी इकाई है। दूसरे विज्ञानकों ने उसे तोड़ दिया कि नहीं, छोटी इकाई प्रोटॉन, इलेक्ट्रॉन, न्यूट्रॉन हैं। दूसरे वैज्ञानिकों ने उसे और विखंडित कर दिया। विज्ञान की लाखों बातें ऐसे ही प्रश्नों, शंकाओं, बहसों से आगे बढ़ी हैं।

हर धर्म और उसकी बातें निर्जीवता की हद तक वहीं खड़ी रहती हैं, जबकि विज्ञान निरंतर बदलने वाली प्रक्रिया है। इस पक्ष पर तुरंत काम करने की जरूरत है। स्कूली बच्चे तर्कशील बनेंगे, अपने आसपास की समस्याओं पर प्रश्न करना, उनसे जूझना सीखेंगे, उनके हल निकालेंगे और इस प्रक्रिया को जारी रखते हुए हमारे विश्वविद्यालय दुनिया की खोजों से सीखते हुए आगे बढ़ेंगे। अगर जरूरत हो तो पांच वर्ष तक सिर्फ विज्ञान की शिक्षा ही दी जाए, तो देश का कायापलट हो सकता है। यह केवल शिक्षा का मामला नहीं है, पूरे समाज को बदलने के लिए ऐसे ही कदमों की जरूरत है।

बुनियादी सामाजिक प्रश्न की तरफ लौटते हैं। जाति और धर्म के भेद-विवेद और उनसे उत्पन्न समस्याओं से पूरा देश जूझ रहा है। विज्ञान की समझ कहती है कि न केवल मनुष्य, बल्कि सभी जीवधारियों के सत्तानबे फीसद जीन समान होते हैं, यानी तीन फीसद की भिन्नता ही करोड़ों जीवों को अलग करती है। तो फिर मनुष्य की जाति, धर्म के भेद क्या नकली, बनावटी नहीं हैं? जब ऐसी तार्किक स्थापना हमारे बचपन में बैठा दी जाए, तो उसे कोई भी राजनीति, कोई भी धर्मगुरु अपने स्वार्थों के लिए इस्तेमाल नहीं कर सकता।

इन्हीं सब कारणों से संयुक्त राष्ट्र ने 2001 से दुनिया भर में विश्व विज्ञान दिवस प्रतिवर्ष दस नवंबर को मनाने का फैसला किया, जिससे कि सभी देश विज्ञान के तार्किक रास्ते से सुख, समृद्धि और विकास की तरफ अग्रसर हो सकें। क्या तीन सौ वर्ष पहले हम इतने सुखी थे? चेचक से लाखों मर जाते थे। इंग्लैंड के डॉक्टर जीनर ने रास्ता खोजा और पूरी दुनिया आज चेचक से मुक्त हो गई है। क्या यह किसी माता, देवी या पीर-पैगंबर की पूजा से संभव हो सकता है? पोलियो का कीटाणु दुनिया भर में लाखों लोगों को पंगु बना देता था, आज हम उससे मुक्त हैं। पेंसिलीन, हैजा के टीके, बड़ी से बड़ी सर्जरी, कैंसर से पार पाना, यानी विज्ञान के बूते दुनिया आराम की जिंदगी जी रही है और इसीलिए मनुष्य की औसत आयु निरंतर बढ़ रही है। भारत का ही उदाहरण लें, तो आजादी के वक्त औसत आयु सिर्फ बत्तीस वर्ष थी, आज सत्तर वर्ष के करीब है। यह सिर्फ विज्ञान ने संभव करके दिखाया है। इसलिए सभी सरकारों का दायित्व है कुछ दिनों के लिए दूसरी बहसों को एक तरफ रख कर सिर्फ विज्ञान में दुनिया के देशों की बराबरी करने की तरकीब निकालें। इससे हमारे समाज में तो बुनियादी परिवर्तन आएगा ही, हमें अरबों रुपए के हथियार भी आयात नहीं करने पड़ेंगे, और न जीवन रक्षक दवाएं आयात करनी होंगी, जो हमारी अर्थव्यवस्था की कमर तोड़ रही हैं।

विज्ञान शिक्षा की तार्किकता और दर्शन से हमारे सामाजिक विज्ञान, इतिहास, राजनीति विज्ञान के शोध भी बदलेंगे और सही मायनों में हमारे विश्वविद्यालय भी। फिर हमारे बच्चे अमेरिका, इंग्लैंड नहीं भागेंगे। हमारे अतीत में जो भी विज्ञान की कसौटी पर अच्छा है उसे भी सहर्ष अपनाएं और दुनिया के मौजूदा ज्ञान को भी।

असलियत से आंख न चुराइए

वक़्त की नब्ज़

■ तवलीन सिंह

जिस दिन महाराष्ट्र और हरियाणा के नतीजे आए थे पिछले सप्ताह, मीर तकी मीर का एक शेर बहुत याद आया मुझे। यह शेर है : 'जिस सर को गरूर आज है या ताजवरी का/ कल उस पे यही शोर है फिर नौहागरी का।' यानी सत्ता इतनी नाजुक चीज है कि कभी भी चली जा सकती है। यह शेर और भी याद आया जब प्रधानमंत्री ने उस शाम को भारतीय जनता पार्टी के मुख्यालय में अपने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते समय कहा कि उनको गर्व होना चाहिए कि इन दोनों राज्यों में पांच साल काम करने के बाद उनकी सरकारें फिर से लौट कर आई हैं। यथार्थ कुछ और है और ऐसा लगा जैसे मोदी इस यथार्थ का सामना करने के बजाय उससे दूर भागना चाहते हैं। क्या इसलिए कि उनको भी अहसास होने लगा है कि सत्ता नाजुक चीज है?

> महाराष्ट्र और हरियाणा के चुनावों में अनुच्छेद तीन सौ सत्तर को हथियार बना कर इस्तेमाल करना गलत था। ऐसा करने से सवाल पूछने वालों की तादाद बढ़ी है।

कहने को तो भारतीय जनता पार्टी की जीत हुई है दोनों राज्यों में, लेकिन इस जीत का विश्लेषण अगर किया जाए, तो साफ दिखने लगते हैं इस जीत में हार के कुछ छिपे हुए आसार। इसलिए कि जबसे नरेंद्र मोदी का दूसरा कार्यकाल शुरू हुआ है तबसे भारतीय जनता पार्टी के बड़े नेताओं में एक अजीब-सा घमंड नजर आने लगा है जैसे कि अब उनको हराने वाला कोई नहीं रहा है। यह घमंड चुनाव अभियान में अहंकार बन गया था, जिसके कारण ऐसा लगा जैसे जमीन से इन आला नेताओं का रिश्ता टूट गया हो। सो, जहां सबसे बड़े मुद्दे थे आर्थिक मंदी से जुड़े हुए, वहां चुनाव अभियान का सबसे बड़ा मुद्दा बनाया उन्होंने अनुच्छेद 370 हटाने को। प्रधानमंत्री ने अपने हर भाषण में अपने प्रतिद्वंद्वियों को चुनौती दी कि अगर इस धारा को हटाना उनको पसंद नहीं है तो खुल कर क्यों नहीं कहते हैं कि इसको वापस लाएंगे। जवाब उनको मिला शरद पावर से, जिन्होंने कहा कि इसके हटने न हटने से महाराष्ट्र को कोई मतलब नहीं है, क्योंकि इस राज्य के किसानों में क्षमता ही नहीं है कश्मीर में जाकर जमीन खरीदने की।

महाराष्ट्र में रहती हूं, सो यकीन मानिए जब मैं कहती हूं कि प्रधानमंत्री और अमित शाह ने बहुत कोशिश की अनुच्छेद 370 को सबसे महत्त्वपूर्ण मुद्दा बनाने की, लेकिन उनकी कोशिशें नाकाम रहीं। आम लोगों से मैंने जब इसे समाप्त किए जाने के बारे में पूछा तो अक्सर जवाब मिला कि उनको ज्यादा चिंता थी ऑटो उद्योग में हजारों नौकरियों के जाने की। जब पंजाब और महाराष्ट्र कोआपरेटिव बैंक (पीएमसी) में घोटाला सामने आया और लोगों के इस सदमे से मरने की खबरें आने लगीं, तो आर्थिक मंदी और भी बड़ा मुद्दा बन गई थी, लेकिन इसको अनदेखा करके भारतीय जनता पार्टी के राजनेताओं ने अनुच्छेद 370 की ही रट लगाए रखी। ऐसे पेश आए जैसे अनुच्छेद 370 हटाए जाने का विरोध करना देशद्रोह के समान हो।

देशभक्ति एक ऐसी भावना है, जो दिल से निकलती है, उसे जबर्दस्ती नहीं थोपा जा सकता। मगर मोदी के इस दूसरे शासनकाल में देशभक्ति को जबर्दस्ती थोपने की लगातार कोशिश होती आई है। कश्मीर का विशेष दर्जा हटाए जाना जैसे परीक्षा बन गई है देशभक्ति की, बिना यह देखे कि जो लोग इस विशेष दर्जे को हटाए जाने के पक्ष में हैं उनको भी अब चिंता होने लगी है कि कश्मीर घाटी में शांति बहाल करने के लिए मोदी सरकार की कोई रणनीति है भी या नहीं, और अगर नहीं है तो क्यों नहीं है।

कश्मीर को अब हम अपना घरेलू मुद्दा नहीं कह सकते हैं। इसका अंतरराष्ट्रीयकरण हो चुका है। जब तक कश्मीर के बड़े राजनेता नजरबंद रहते हैं, जब तक घाटी में कर्फ्यू हर दूसरे दिन लगता रहता है, तब तक दुनिया सवाल उठाती रहेगी और भारत की बदनामी होती रहेगी, जैसे वॉशिंगटन में पिछले सप्ताह तब हुई जब अमेरिका की एक कोंग्रेस समिति ने दक्षिण एशिया में मानवाधिकारों के उल्लंघन पर चर्चा की। चर्चा सिर्फ कश्मीर घाटी पर हुई। न किसी ने बलूचिस्तान का जिक्र किया और न ही किसी ने ध्यान दिलाया पाकिस्तान में शिया मुसलमानों के साथ हो रहे जुल्म की तरफ। सिर्फ कश्मीर की बातें हुईं, जिनको सुन कर ऐसा लगा कि भारत एक ऐसा देश है, जिसमें लोकतंत्र नहीं तानाशाही है। ऐसी चर्चाएं होती रहेंगी, जब तक कश्मीर घाटी में शांति बहाल नहीं होती और वह तभी होगी जब आम कश्मीरी को महसूस होने लगेगा कि वास्तव में अनुच्छेद 370 के हटने से उसकी भलाई है। तब तक मोदी सरकार की कश्मीर नीति पर सवाल पूछे जाएंगे।

महाराष्ट्र और हरियाणा के चुनावों में अनुच्छेद तीन सौ सत्तर को हथियार बना कर इस्तेमाल करना गलत था। ऐसा करने से सवाल पूछने वालों की तादाद बढ़ी है। मेरी राय है कि इस अनुच्छेद को कभी न कभी तो हटाया ही जाना था, लेकिन मुझे भी चिंता होने लगी है कि अगले कदम के बारे में मोदी सरकार ने अभी तक सोचा ही नहीं है। कभी न कभी तो कर्फ्यू हटाना पड़ेगा घाटी से, कभी न कभी तो कश्मीर के बड़े राजनेताओं को रिहा करना पड़ेगा, तब क्या होगा? क्या कोई रणनीति बनी है शांति वापस लाने की? इन सवालों का वास्ता कश्मीर से है, किसी अन्य राज्य के चुनावों से नहीं।

हर राज्य के अपने स्थानीय मुद्दे होते हैं, जिनको उठाए बगैर चुनाव बेमतलब से हो जाते हैं आम मतदाता की नजरों में। सो, ऐसा हुआ है इन विधानसभा चुनावों में और पहली बार ऐसा लगने लगा है कि मोदी-शाह के आलीशान चुनावी रथ में थोड़ी-सी कमजोरी आ गई है। नहीं आई होती, तो लोकसभा चुनावों में शानदार जीत हासिल करने के कुछ ही महीनों बाद महाराष्ट्र और हरियाणा में कमजोरियां न दिखने लगी होतीं।

आधी थाली की उदासी

एक एंकर ने एक्जिट पोल को एक तरफ अतिरिक्त झुका दिखाने वाले विश्लेषक को परिणाम आने से पहले ही विदा कर दिया, क्योंकि चुनाव परिणाम उसके सर्वे को बुरी तरह से झूठा साबित करने वाले रहे। उधर दूसरे चैनल के एंकर द्वय ने अपने एक्जिट पोल वाले 'एक्सपर्ट' को उसकी 'जोखिम भरी सटीकता' पर मिठाई खिलाई!

परिणाम आने के पहले वाली शाम को सभी एक्जिट पोल भाजपा को महाराष्ट्र और हरियाणा दोनों राज्यों में 'स्वीप' करा रहे थे। सिर्फ इंडिया टुडे पर प्रदीप गुप्ता ने एक दिन बाद अपना एक्जिट पोल देकर बताया कि किसी का स्वीप कहीं नहीं है और हरियाणा में तो लटकंत विधानसभा होगी।

और जब परिणाम आए तो यही होता दिखा! वृहस्पतिवार को दोपहर तक हरियाणा में भाजपा चालीस पर अटक चुकी थी और कांग्रेस इकतीस तक आ चुकी थी।

चर्चा के ऐन बीच चुनाव के पुराने विश्लेषक योगेंद्र यादव तक ने औरों के 'अतिरंजित एक्जिट पोल' दिखाने वालों के बीच 'कड़वा सच' बताने का साहस दिखाने वाले प्रदीप गुप्ता को खुल कर बधाई दी!

चर्चाकार पहली बार खुले कि राष्ट्रवाद, तीन सौ सत्तर नहीं चले, स्थानीय मुद्दे ही चले।

फिर भी भाजपा प्रवक्ता अपनी पर अड़े रहे कि दोनों राज्यों में सरकारें हमीं बनाएंगे!एक एंकर एक भाजपा वाले से बोला कि सर जी ये आपके लिए 'चेतावनी' है, 'वेकअप काल' है, यानी कि समय रहते जाग जाइए, वरना आगे बड़ा झटका भी लग सकता है।

बहुत दिन बाद कई भक्त चैनलों की बहसों तक में जान आई। कुछ एंकरों ने दो टूक बातें कहने का साहस दिखाया।

एक एंकर ने कहा कि हरियाणा के जाटों ने शायद इस बार तय कर लिया कि भाजपा को सबक सिखाना है।

एक चर्चक बोला : भाजपा अजेय है, यह मिथ टूट चुका है!

एक ने चुटकी ली कि 'अबकी बार सत्तर पार' कहने वाले चालीस भी पार न कर सके!

हरियाणा के परिणामों ने कांग्रेस को भाजपा को ठोकने का मौका दे दिया। कांग्रेस के आनंद शर्मा ने कहा कि बेरोजगारी, किसानों की बदहाली और आर्थिक संकट आदि जनता के मुद्दे थे, जबकि भाजपा अहंकार और प्रचार में बह गई थी। जनता चतुर है। उसने सबको संतुलन में ला दिया! यह एक बड़े परिवर्तन की शुरुआत है।

इसके बाद के सीन कुछ अजीब दिखे। जिस वक्त फडणवीस बोल रहे थे, ठीक उसी वक्त पीएम वाराणसी के लोगों को संबोधित करते दिखे। हम समझे कि अब चैनल पीएम के संबोधन को वरीयता देंगे, लेकिन ऐसा न हुआ। कई चैनलों ने 'स्प्लिट स्क्रीन' करके दिखाना शुरू किया। लेकिन कई चैनलों में फडणवीस बोलते दिखते रहे और पीएम को साइलेंट दिखाते रहे! हमें तो यह शुद्ध बदतमीजी लगी!

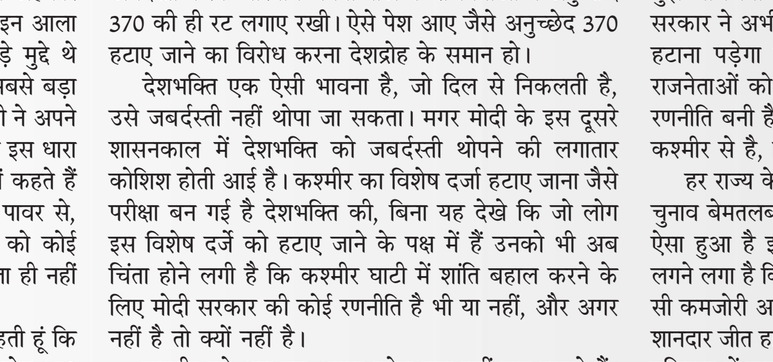

बाखबर

■ सुधीश पचौरी

> सबसे स्पर्धात्मक दृश्य महाराष्ट्र के चुनावों के बाद दिखे। पहले उद्धव ठाकरे ने प्रेस को बताया कि पिछले चुनाव के पहले भाजपा अध्यक्ष घर आए थे, तब उनके साथ महाराष्ट्र में 'फिफ्टी-फिफ्टी सीएम' वाले फार्मूले पर सहमति हुई थी। हम उस पर कायम हैं।

इन परिणामों ने बेचारे लड्डुओं को एकदम भूमिका विहीन कर दिया।

सुबह सुबह एक हिंदी चैनल एक जगह बड़े उत्साह से बहुत से लड्डू बनते दिखा रहा था, लेकिन शाम तक उसने भी लड्डुओं की थालियां तक गायब कर दीं!

सिर्फ मुंबई में कुछ पटाखे फटते और ढोल बजते सुनाई दिए, लेकिन हरियाणा में न लड्डू दिखे, न बहुत ढोल-नगाड़े!

शायद इसी वजह से भाजपा कार्यकर्ताओं को हौसला बढ़ाने के लिए भाजपा के मुख्यालय में एक धन्यवाद सभा की गई, जिसमें भाजपा के केंद्रीय नेताओं ने कार्यकर्ताओं को प्रबोधा। पहली बार कार्यकर्ताओं में पुराने वाला वह जोश-खरोश नहीं दिखा, जो अक्सर ऐसे अवसरों पर अक्सर दिखता रहा है।

यों चिदंबरम इडी की गिरफ्त में हैं, मगर ज्यों ही चैनलों के कैमरे चिदंबरम की ओर लपके, त्यों ही उन्होंने एक लाइन वाला तीर चला कर खबर बना दी कि 'खामोश देश भक्ति ने पहलवान छाप राष्ट्रवाद को पटखनी दी है!'

इस सप्ताह साथियों को सबसे अधिक निराश किया तो नोबेल प्राप्त भाई अभिजीत बनर्जी ने। एक चैनल ने एक बातचीत का प्रसारण कर उनके लच्छन पहले ही जता दिए थे कि भाई जी लेफ्ट-राइट करने की जगह एकदम 'प्रैक्टीकल' बंदे हैं और 'यादृच्छिक नियंत्रित परीक्षण' नामक 'विकासमूलक तकनीक' के जरिए केंद्र और राज्य सरकारों की सेवा के लिए तैयार हैं। कथित जेएनयू ब्रांड 'क्रांतिकारिता' पीएम से भेंट करने के बाद पीएम की मुक्तकंठ से प्रशंसा करती दिखी।

आश्चर्य कि किसी चैनल ने पलट कर जेएनयू के क्रांतिकारी साथियों से न पूछा कि आदरणीय के प्रति अब आपके क्या विचार हैं?

सबसे स्पर्धात्मक दृश्य महाराष्ट्र के चुनावों के बाद दिखे। पहले उद्धव ठाकरे ने प्रेस को बताया कि पिछले चुनाव के पहले भाजपा अध्यक्ष घर आए थे, तब उनके साथ महाराष्ट्र में 'फिफ्टी-फिफ्टी सीएम' वाले फार्मूले पर सहमति हुई थी। हम उस पर कायम हैं। इसका मतलब था कि पहले ढाई साल शिवसेना का सीएम रहेगा, बाकी ढाई बरस भाजपा का सीएम रहेगा। इसी के तहत शिवसेना ने तो चुनाव के पहले ही आदित्य ठाकरे को सीएम बनाने की बात कह दी थी!

हाय! कहां पूरी थाली और कहां आधी थाली! यह है : आधी थाली की उदासी!

इस बीच एक दिन केंद्रीय कैबिनेट ने दिल्ली की लगभग सत्रह सौ अनधिकृत कॉलोनियों को अधिकृत करने का एलान कर दिया। इसका चुनावी हेतु तब और साफ हुआ, जब केंद्रीय शहरी विकास मंत्री ने इस फैसले की वजाहत करते हुए कहा कि इस फैसले से दिल्ली के चालीस से पचास लाख लोग लाभान्वित होंगे! यानी इस हाथ ले उस हाथ दे!

लेकिन, ध्यान रहे कि दिल्ली के 'दादा' केजरीवाल हैं और वे कोई 'हूडा' या 'पवार' नहीं हैं!